प्रातः क्लास 24-12-68 ओमशान्ति पिता श्री शिव बाबा याद है?

बच्चे सिर्फ याद की यात्रा में हो बैठे हुये हैं, बच्चों को यह नशा है हम श्रीमत पर अपना पारिस्तान स्थापन कर रहे हैं। इतना उमंग खुशी रहनी चाहिए। वाहयात बातें किचड़पट्टी आदि सभी निकल जानी चाहिए। बेहद के बाप को देखते ही हुलास में आना चाहिए। जितना2 तुम याद की यात्रा में रहेंगे उतना ही इम्प्रुवमेन्ट आती जावेंगी। बाप कहते हैं बच्चों के लिये रूहानी युनिवर्सिटी होनी चाहिए। तुम्हारा नाम ही है वर्ल्ड स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। तो युनिवर्सिटी कहां हैं। बच्चे कहां पढ़े। युनिवर्सिटी खास स्थापन की जाती है। इसके साथ बड़ी रायल युनिवर्सिटी चाहिए। हास्टल चाहिए। तुम्हारा कितना रायल ख्यालात होनी चाहिए। बाबा को तो दिन रात यही ख्यालात रहता है। कैसे इन्हों को पढ़ाकर ऊंच ते ऊंच इम्तहान पास करावें। जो फिर यह विश्व के मालिक बनने वाले हैं। असल में तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान शुध थी तो शरीर भी कितना सतोप्रधान सुन्दर था। राजाई भी कितनी ऊंच थी। तुम्हारा हद के संसारिक किचड़पट्टी की बातों में टाईम बहुत वेस्ट होता है। तुम स्टुडन्ट के अन्दर किचड़ पट्टी की ख्यालात नहीं होनी चाहिए। कमेटियां आदि तो बहुत अच्छी2 बनाते हैं, योगबल तो है नहीं। जो भी कमेटियां आदि बनती हैं गपोड़ा बहुत मारते हैं हम यह करेंगे यह करेंगे। माया भी कहती हम उनको नाक से पकड़ेंगे कान से पकड़ेंगे। बाप के साथ लव ही नहीं है। कहा जाता है नर चाहत कुछ और है ... तो माया भी कुछ करने नहीं देती है। माया बहुत ठगने वाली है। कान ही काप लेती है। बाप कितना बच्चों को ऊंच बनाते हैं, डायरेक्शन देते हैं यह यह करो। बाबा बड़ी रायल2 बच्चियां भेजे देते हैं। कोई2 कहते हैं बाबा हम ट्रेनिंग लिये जावें। मैं कहता हूं अपना मुंह तो देखो। बाप तो ऐसे ही कहेंगे ना। अपने को देखो हमारे में कितने अवगुण हैं। अच्छे2 महारथियों को भी माया देखो क्या कर देती है। एकदम लूनपानी कर देती है। ऐसे खोटे बच्चे हैं। बाप को कब भी याद नहीं करते। ज्ञान का ज्ञ भी नहीं जानते बाहर का शो बहुत है। इसमें तो बड़ा अन्तर्मुख रहना चाहिए बाप के डायरेक्शन पर। कइयों की तो ऐसी चलन होती है जैसे अनपढ़े जटलोग होते हैं। थोड़ी सी पैसा है तो नशा चढ़ जाता है। यह समझते नहीं और हम तो कंगाल हैं। माया समझने नहीं देती माया बड़ी जबरदस्त है। बाबा थोड़ी महिमा करते हैं तो इसमें बड़ा खुश हो जाते हैं। बाबा को तो रात दिन यही ख्यालात होती है युनिवर्सिटी फर्स्ट क्लास होनी चाहिए। जहां अच्छी प्रीत बच्चियां पढ़े। तुम जानते हो हम स्वर्ग में जाते हैं तो खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। यहां बाबा कसम2 का डोज देते हैं नशा चढ़ाने। पीग का नशा होता है ना। कोई दिवाला निकला हुआ हो उनको शराब पीला दो तो समझेंगे हम बादशाह हैं। फिर नशा पूरा होने से वैसे का वैसे बन जाते हैं। अभी यह तो रूहानी नशा। तुम जानते हो बेहद का बाप, टीचर बन हमको पढ़ाते हैं। और डायरेक्शन देते हैं ऐसे2 करो। कोई। समय में किसको मिथ्या अहंकार भी आ जाता है। ऐसी2 बातें बनाते हैं जो बात मत पूछो। बाबा समझते हैं यह चल न सकेंगे। अन्दर की बड़ी सफाई चाहिए। आत्मा बहुत अच्छी चाहिए। तुम्हारी लव मैरेज है ना। लवमैरेज में कितना प्यार होता है। यह तो पतियों का पति है। सो भी कितने की लवमैरेज होती है। एक की थोड़ी ही होती है। सभी कहते हैं हमारी सगाई तो शिव बाबा साथ हुई है तो हम स्वर्ग में जाय बैठेंगे। खुशी की बात है ना। अन्दर में आना चाहिए ना बाबा हमको कितना श्रृंगारते हैं। शिव बाबा श्रृंगार करते हैं ब्रह्मा द्वारा। यह भी राय देते हैं तुम्हारी बुधि में है बाप को याद करते2 हम सतोप्रधान बन जावेंगे। इस मैरेज को और कोई जानते ही नहीं। इसमें बड़ा नशा रहता है। अभी अजन्ता इतना नशा चढ़ता नहीं है। होना जरूर। गायन भी है अति ईन्द्रियसुखगोप-गोपियों से पूछो। अभी तुम्हारी आत्मायें कितनी छी छी है। जैसे बहुत गन्दी कपड़े में बैठी है। उन्हों को बाप आकर चेंज करते हैं। रजोवेन्ट करते हैं। मनुष्य गलानी चेंज कराते हैं

24-12-68

ना। एक तो पहले से ही बन्दर हैं बाकी भी बन्दर की ग्लास डालने से पूरे बन्दर बन जाते हैं। खुश कितना होते हैं। तुमको तो अभी बाप मिला वेरा ही पार है। समझते हो हम बेहद के बाप के बने हैं। तो अपने को कितना जल्दी सुधारना चाहिए। रात दिन यही खुशी, यही चिन्तन रहे। तुमको मार्शल देखो कौन मिला है वह आयव मार्शल है कितने उनसे डरते हैं। सभी को पकड़ बैठा है। उनमें विल पावर है ना। बाप भी तुम बच्चों को कितना श्रृंगारते हैं-रात दिन यही ख्यालात में रहना होता है। जो जो अच्छी रीत समझते हैं पहचानते हैं वह तो जैसे उड़ने लग पड़ते हैं। तुम समझते हो बाबा हमारी आत्मा को क्या करते हैं आत्मा हमारी जो बिल्कुल ही डर्टी बन पड़ी है डर्टी जगह में बैठी है तो तुम अभी संगम पर हो। बाकी वह सभी तो गन्द में पड़े हैं। जैसे किचड़े के किनारे झोपड़ियां लगाकर गन्द में बैठे हैं। यह फिर है बेहद की बात। अभी उससे निकलने की शिव बाबा बहुत सहज युक्ति बताते हैं मीठे2 बच्चों तुम जानते हो इस समय तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित है। गन्दगी नाली, विषयवैतरणी नदी में पड़े हो। तो तुम अभी निकल आये हो। बाकी जो भी बड़े2 दुनिया के वजीर आदि हैं सभी झुग्गियों में बैठे हैं। तुमको तो बाप ने बचा लिया। अभी तुम्हारी आत्मा पवित्र हो रही है। तुम्हारी भेंट में सभी की आत्मा डर्टी है। बिल्कुल डर्टीयस्ट है। राजाएं आदि भी बड़े गन्दे बनते हैं। तो एकदम पैसा उड़ा देते हैं। वह तो एकदम किचड़े जगह में पड़े हैं। तुम तो बाप को याद कर पावन बनते हो। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। गन्दी झोपड़ियों से तुमको बाप ने निकाल दिया है। अभी तुम निकल आये हो। जो जो निकलकर आये हैं। ज्ञान की प्रकाष्टा है ना। तुमको बाप मिला तो फिर क्या। यह नशा जब चढ़े तब तुम किसको समझा सको। बाप आया हुआ है बाप हमारी आत्माओं को पवित्र बना देते हैं। आत्मा पवित्र बनने से फिर शरीर भी फर्स्ट क्लास मिलता है। अभी तुम्हारी आत्मा कहां बैठी है। इस झोपड़ी में बैठी हुई है। तमोप्रधान दुनिया है ना। किचड़े के किनारे पर आकर बैठे हो। विचार करो हम कहां से निकले हैं। बाप ने इस गंदी नाली से बैठ निकाली है। आत्मा हमारी अभी स्वच्छ बन जावेगी। रहने लिये भी फर्स्ट क्लास महल मिलेंगी। हमारी आत्मा को बाप श्रृंगार कर स्वर्ग में ले जा रहे हैं। ऐसे2 अन्दर में ख्यालात बच्चों की आनी चाहिए। बाबा कितना नशा चढ़ाते हैं। तुम्हारी आत्मा इतनी ऊंच थी, फिर गिरते2 आकर नीचे मायालय में पड़े हैं। शिवालय में थी तो आत्मा कितनी शुद्ध थी। तो फिर शिवालय में जाने का उपाय करना चाहिए ना। आपस में मिल जल्दी2 करना चाहिए। बाबा को तो बन्दर लगता है। बच्चों को वह मिला नहीं। बाबा हमको कहां से निकालते हैं। पाण्डव गवर्मेन्ट स्थापन करने वाला बाप है। पाण्डव गवर्मेन्ट और कौरव गवर्मेन्ट का भेंट तो करो। भारत जो हेविन था वो अभी हेल है। आत्मा की बात है। आत्मा पर ही तमस पड़ता है। एकदम तमोप्रधान दुनिया में आकर आत्मा बैठी है। इसलिये बाप को याद करते हैं बाबा हमको वहां ले चलो। यहां बैठे भी तुमको वह ख्यालात होनी चाहिए। इसलिये बाबा कहते हैं बच्चों के लिए फर्स्ट क्लास यूनिवर्सिटी बनाओ। कल्प2 बनते हैं। ख्यालात बड़ी आलीशान होनी चाहिए। अभी वह नशा नहीं चढ़ता है। नशा चढ़ा हुआ हो तो पता नहीं क्या कर के दिखावे। युनिवर्सिटी का अर्थ ही नहीं समझते हैं। उस रायलिटी के नशे में नहीं जाते। माया दबाये बैठती है। बाबा समझाते हैं अपना नशा मत चढ़ाओ। कमिटियां आदि तो बहुत बनाते हैं परन्तु पहले अपनी क्वालीफिकेशन को तो देखो। बाबा हरेक की क्वालीफिकेशन मंगवायेंगे कैसे पढ़ते हैं, क्या खर्च करते हैं। सिर्फ मुंह का पकोड़ा नहीं खाना है। जो कहते हैं वह करना है। गपोड़े नहीं, कि यह करेंगे यह करेंगे। कहते हैं यह करेंगे कल मौत आया खत्म हो जावेंगे। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। वहां कब अकाले मृत्यु होता ही नहीं। वहां है ही सुखधाम। सुखधाम में काल को आने का हुक्म नहीं। राम राज्य और रावणराज्य के अर्थ भी समझना है। अभी तुम्हारी लड़ाई है ही रावण से। देह अभिमान भी कमाल करता है। देहीअभिमानी हो -

आत्मा शुध वन जाती है। तो कैसे वन जाती है। तुम समझते हो ना वहां हमारी कैसे महल बनेंगे। अभी तुम संगम पर आये हो। नम्बरवार सुधर रहे हैं लायक बन रहे हैं। वह सभी हैं नालायक नर्कवासी है ना। तुम्हारी आत्मा पतित होने कारण शरीरभी पतित मिला है। अभी मैं आया हूं तुमको स्वर्गवासी बनाने। याद के साथ दैवी गुण भी चाहिए। मासी का घर थोड़ेही हैं। मासा असुर बना देती है। समझते हैं कि बाबा आया है हमको नर से ना० वनाने। परन्तु माया का बड़ा गुप्त मुकाबला है। तुम्हारी लड़ाई है ही गुप्त। इसलिये तुमको अननोन वारियर्स कहा जाता है। अननोन वारियर्स कोई होता ही नहीं। तुम्हारा ही नाम है अननोन वारियर्स। और तो सभी के नाम रजिस्टरों में है ही। तुम्हारे अननोन वारियर्स की निशानी उन्होंने पकड़ी है। तुम कितने गुप्त हो किसको पता नहीं। तुम विश्व पर विश्व पर विजय पा रहे हो। माया को वस करने लिये तुम बाप को याद करते हो। फिर भी माया भूला देती है। कल्प2 तुम अपना राज्य स्थापन करते हो। तो अननोन वारियर्स तुम हो। सिर्फ बाप को याद करते हो। इसमें हाथ पांव कुछ भी नहीं चलाते हो। याद के लिये युक्तियां भी बाबा बहुत बताते हैं। चलते फिरते तुम याद की यात्रा करो। पढ़ाई भी करो। अभी तुम समझते हो हम क्या थे, क्या बन गये अभी फिर बाबा हमको क्या बनाते हैं। कितना सहज युक्ति बताते हैं। कहां भी रहते याद करो तो जंक उतर जाये। कल्प2 यह युक्ति रचते रहते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो सतोप्रधान बन जावेंगे। और कोई भी बन्धन नहीं लेट्रीन में जाओ तो भी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो मैल उतर जाये। आत्मा को कोई तिलक आदि नहीं लगाना है। यह सभी भक्ति मार्ग की निशानी है। इस ज्ञान मार्ग में कोई दरकार नहीं। पानी का बर्चा नहीं। घर बैठे याद करते रहो। कितना सहज है। वह बाबा हमारा बाबा भी हैटीचर भी है गुरु भी है। पहले बाप की याद फिर टीचर की याद फिर गुरु की याद। कायदे ऐसे कहते हैं। टीचर को तो जरूर याद करेंगे। उनसे पढ़ाई का वरसा मिलता है। फिर वानप्रस्त अवस्था में गुरु मिलता है। यह बाप तो सभी छुटा दे देते हैं। बाप तुमको 21 जन्मों के लिये राजाई का छुटा दे देते हैं। शादी में कन्या को दहेज गुप्त देते हैं ना। शो करने की दरकार नहीं। कहा जाता है गुप्त दान। शिव बाबा भी गुप्त है ना। इसमें अहंकार आदि की कोई बात नहीं। अकोई2 को अहंकार रहता है। यह सभी गुप्त हैं। बाप तुमको विश्व की बादशाही दहेज में देते हैं। कितना गुप्त तुम्हारा श्रृंगार हो रहा हैं। कितना बड़ा दहेज मिलता है। बाप कैसी युक्ति से देते हैं= किसको पता नहीं पड़ता। यहां तुम बेगर हो दूसरे जन्म में गोल्डेन एगे इन माउथ होगा। तुम गोल्डेन दुनिया में जाते हो। वहां सभी कुछ सोने का होगा। साहुकारों के महलों में हीरे जड़ित होंगे। फर्क तो जरूर रहेगा। यह भी अभी तुम समझते हो। मनुष्य तो उल्लु मिसल उल्टे लटके हुये हैं। माया लटकाये देती है। अभी बाप आया है तो बच्चों में कितना हुलास होना चाहिए। परंतु माया भूला देती है। बाप की डायरेक्शन है= बाप या ब्रह्मा की, भाई कि है कि बाप को इसमें बहुत मुंझते हैं। बाप कहते हैं अच्छा वा बुरा हो तुम बाप के डायरेक्शन ही समझो। उन पर चलना पड़े इनकी कोई भूल भी हो जावेंगे तो भूल करा देंगे। इनमें ताकत तो है ना। तुम देखते हो यह कैसे चलते हैं। इन पैर पर कौन बैठे हैं। एकदम बाजु में बैठे हैं। गुरु लोग बाजु में बिठाकर समझाते हैं ना। तो भी मेहनत इनको करनी पड़ती है। तभी० प्रधान से सतोप्रधान बनने में पुरु० करना पड़ता है। बाप कहते हैं मुझे याद कर भोजन बनाओ। शिव बाबा की याद का भोजन कवकिसको मिलता नहीं। अभी तक भोजन का गायन है। महिमा गाते हैं परन्तु समझते नहीं। हां इतना कहेंगे रिलीजसमाईन्डेड है। सतयुग में भक्ति होती नहीं। कहते हैं ज्ञान भक्ति वैराग्य। कितने फर्स्टक्लास अक्षर हैं। ज्ञान दिन भक्ति रात। फिर रात से वैराग्य हो ता है फिर दिन= दिन में जाते हैं। अभी तुमको धक्का नहीं खाना पड़ता है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। वह लव मैरेज करते हैं गठर में डाल देते हैं। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूं। बीज को और चक्र को याद करो। अभी कलियुग का अन्त है सतयुग आना है। संगम पर तुम गुल2 बनते हो। आत्मा सतोप्र० बन जावेगी तो रहने का महल भी सतो० बन जावेगी। दुनिया ही नई बन जावेगी। ओम।